Code No : 6

"सबके साथ सबका विकास"

"सम्पूर्ण संसार आपका है और भले कार्य आपका धर्म।" इस तरह सोचना आज की समूह में नहीं है। एक और एक के पास एक मंत्र है, "मेरा पुरोगति, मेरा परिवार, मेरा जीवन"। जिस तरह है, आज की मानव का स्थिति। क्योंकि, समाज की पुरोगति के पास थौड़ना है तो इस तरह कर्म बिलकुल सार्थक है। एक मनुष्य को समझा है तो, सम्पूर्ण संसार आपका है और भले कार्य आपका धर्म। आज की मानव, खुद परिवार की उन्नति को कर्म किया, नहीं वो समाज और देश से।

"सबके साथ सबका विकास" इस विषय सुनता है तो पहले दिल में एक कार्य

बेना रहती है। आज की समुद्र में एक व्यक्ति को जीना करने तो बहुत कार्य बिलकुल आतश्यक है। एक व्यक्ति को चिन्तागति के प्रति इस तरह सोच भी है, एक कार, दो और त्री घर, घर में स्विम्मिंग पूल, बातडब ......
आज की मनुष्य की सोचा यह है। इस तरह सोचा है तो, सबको स्वय कर्म और पुरागति पर धन निक्षेपित है। और गरीबी जन को एक धन भरना उनकी प्रयास है। सबके साथ सबका विकास ही है। इस वाक्य का एक दृष्टान्त कर्म है धन का दुरुपयोग। अपने हाथों से ही, कर्म बना और काम किया धन भी है। इसलिए, वे इस धन पर बड़े-बड़े मकानों खरीद कर सकता है। दो, तीन और चार व्यक्ति को जीने है तो बड़े-बड़े मकान की आवश्यक है। इस तरह मकानों से जीना है तो आपका "स्टेटस" बढ़ रहा है। इस विधा

Card No : 6

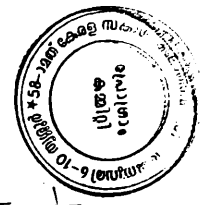

[stamp]

पर आलोचित है और धन दुरूपयोग करता है। इस व्यक्तियों ने एक समाज का आवश्यक जगहों को स्थान निर्णय किया और उनको धन चोदृय किया .... उनका साथ धन बिलकुल नहीं है। जिस तरह हमारा समाप का संचार।

इसका एक उत्तम उदाहरण है हमारा मातृभूमि, हमारा राज्य ईंध्या की बड़ा धनिक "मुकेश अम्बानि" और "पत्नि" "निता अम्बानि" का कर्म। निता अम्बानि की एक बड़ा कम्पनि है "जियो"। जियो कम्पनि ने आज की समूह में फ्री जियो सिम कार्ड और फ्री कॉल और फ्री इंडरनेट मिला। इस तरह फ्री इंडरनेट मिला कहाँ उपयोगित है .....? कहाँ की इसका उपयोग करना ...? बिलकुल धनिक है। समाज की मीडियम और हाई क्लास लोग इसपर उपयोग दिया।

समाज की नीचे विभाग, गरीबों पर इसका उपयोग नहीं किया। तो कम्पनि ओणेर्स को इसपर बड़ा प्राफिट लिया। समाज की मीडियम और हाई क्लास लोग ने उनका जीवित रीति को बड़ जाता था। गरीबों को इसपर कई तरह गुण नहीं मिला। इस तरह है हमारा समाज को थोड़ना।

पुरातन काल में जिस तरह सोचना की आवश्यकता भी नहीं। एक और एक परोपकार से जीवित नय कर था। परस्पर विश्वास उनका ही है। इस तरह समूह का उल्टा है आज की समूह की गति, एक व्यक्ति को दुःख पर खुश दिलात है। असहायता और गरीबों को नीचे वर्ग तक लिया जाता है, आज की समूह की गति।

पुरातन काल से एक और एक कार्य बहुत मूल्य कल दिखता है। तो

Card No : 6

[stamp]

हरेक कार्य से पुरातन लोग स्पष्ठ पर दिखता है। मेरा विकास के बदले अन्य का विकास उनका मन की है। राजस्तान संस्थान भूप्रकृति के अनुसार वर्ष का उपलब्धता में कमी है। तो हरेक व्यक्ति ने वर्ष की स्टोर करने में वर्षा की तालाब मिलता है। एक गाँव में पच्चास और अधिक तालाब है। राजस्थानियों वर्षा के समया एक बूँद से नहीं नष्ट दिया। उनका मन में एक और एक बूँद है वरूणा देवता है। जिस तरह पुरातनीय लोग मिलकर जलस्त्रोतस्सों, आज की व्यक्तियों काटा दिया है। जलस्त्रोतसों ने अपहार किया और नाश किया, इस स्थान पर नई मकान और बड़े घर, फाक्ट-रियों बना रखता था। और इस तरह घर मिलता, और मकान मिलता, उनके स्टेटस

बड़ा होकर, उनको गरीबि जन ने भूल गया है और इस दिन तक उनको आँखों में उनका विकास बढ़ गया है। हरेक व्यक्ति ने कई प्रकार बड़ा होकर, उनके साथ सहायता का दिल है और विनय है व इंसानियत की उड़मा का एक मानव है। और अस्सहायता और अहंकार ने उनका विकास किया व नाश से कर सकती है।

हरेक व्यक्ति का धर्म है समाज की विकास पर और समाज की उन्नति पर कार्य और काम करना। इसलिए काम करना, पहले समाज भी सुंदर हो है, दूसरे संस्थान भी सुंदर हो सकता है, तीसरे एक राज्य भी स्पष्ठ होकर जाती है। एक राज्य का विकास हरेक व्यक्ति के पास है। तो परिवार में काम करना तक समय में एक से तीन भाग समूह को और गरीबों को उन्नति पर

Cond No: 6

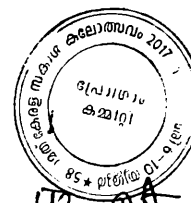

കലോത്സവം 2017 പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

काम करना, वे देव के स्थान पर भी है। सबको ने समाज की उन्नति पर एक पंक कर्म दिया समूह का विकास हमारा विकास पर लिया जाता था।

नोर्त इंद्धिया में एक त्योहार है फूलदेई, इस समय में कई तरह लोग दिखा रहा है। इस लोग के बीच में खरीदना भी है। इसका धन दुकान से नहीं लोगों से नहीं पिया। आपसी विश्वास और परस्पर धारण पर उन्होंने धन नहीं मिला। इस तरह समाज उत्तराखंड में है। वे आपासि विश्वास के बारे में जीना कर दिया था। उनको साथ अपना विकास का सोचा है, और सबका विकास का सोचा है उनको।

विकसित समूह का उत्तम उधाहरण है युणॅटड स्टेट्स ओफ अमेरिकि, इस राज्य में हरेक व्यक्ति ने सहायता का मनोभाव

बड़ा हुआ था। जिस कारण से अमेरिका ने गरिबों की संख्या भी कमी है।
एक विकसन राज्य है भारत, इस राज्य अनेक सात सबका विकास, जिस तरह मनोभाव प्रकट होति तो इंडिया में गरीबों की किती भी अधिक है।
इंडिया की जनसंख्या पर 17% गरीबों है। कुछ संस्थानों पर गरीबों का संख्या नहीं है, कुछ संस्थान से बड़ा है।

जिस तरह गरीबों का संख्या बड़ा रहै तो एक मुख्य कारण है इंसानियत की कमि। आज की मानव में इंसानियत की शतमान भी कमी है। आज की समाज, एक व्यक्ति ने अनेक व्यक्ति को अनुकरण किया है। घरे के पास एक घर में एक कार खरीदना, तो इस घर के पास परिवारों में चर्चा शुरु करता है। कार की निर, बड़ा और सुंदर, परिवार की अवस्था भी चेंज हो सकता था। घर की अंदर कार खरीदने को बोलबाल भी बड़

Ward No: 6

[stamp]

सकता है। अगले हफ्ते पर हम
घर में काला, लाल, सफेद, नीला आदि
निर से विविध तरह कार ने दिया सकता
है। जिस तरह है आज की समूह की
सोचना।

पखिार को विकास की समय
पर प्रकृति और माटी का वरदान से काटा
और नाश करना है आज की प्रवणता।
"हम प्रकृति की वरदान पर सुभिक्ष है और
हमारा कर्तव्य है आनेवाली पीढ़ी को
हाथ के हाथ पर दिया देता है अपना
दायित्व है। आनेवाले पीढ़ी को हरेक
वरदान को भरना, हरेक वरदान की
नाश नहीं करता, नाश करने है तो मुझको
नहीं अवकाश है। अपना दायित्व है आनेवाले
पीढ़ियों को सद्गुण और स्पष्ट मातृभूमि
को भरना, और कई तरह काम पर,
विकास पर, इसको नाश होता है
अपना नहीं करती है तो हमको नहीं

अवकाश है।

एक और एक व्यक्ति और परिवार का विकास बढ़ने है तो परिवार और व्यक्ति के बीच लड़ाई भी है। इस को बड़ा घर, मैं नहीं, उसको सुंदर कपड़ा मुझको नहीं। इस तरह कार्य के आधार पर लड़ाई भी परिवार पर बड़ा रहती है।

हमको समझना की एक बात है तो प्रतिदिन पर खाना की कमी पर एक बच्चा और कुछ मानव राशी मर गया था। एक और एक की मरना की न्यूस हम सुनता की समय पर, कुछ समय पर सोचा, ... खाना की कमी पर मरना की तरह जन विभाग ...... हम खाना की आधार पर बहुत धन दुरुपयोग करता है।

इस बालना की इस एक सोचना की बात है। इस बड़े संसार पर कई तरह जन विभाग है ...... तो सोच लिए उसपर।

Cowrd NO:6

"आज के बच्चों कल का नागरिक है।" तो हम बच्चों ने पढ़ा जाती है तो, इस बड़ा देश आपका और देश की वासियों की है। देश की उन्नति पर काम करना, हरेक व्यक्ति को दायित्व है। हमारा परिवार की उन्नति के काम करने को समय पर इसकी एक भाग समाज और गरीबों की आश्वास और उन्नति पर करती है तो, एक व्यकित भी एक व्यक्ति को स्थान पर समूह मानता था।

"खुद विकास वो अनेक कर्म दिया की समान है समाज की पुरोगति पर एक करना"। हमारे देश की पुरोगति पर अभिमान करने तो, इसकी पुरोगति पर काम करना।

" हमारे मन अनेक चिन्तागतियों की भंडार है तो हम स्वार्थी की स्थान पर नहीं चला और परोपकार की स्थान पर चला" जिस सोचा है हमारा मंत्र

x ———— x